215hi04

4

सहकारी समितियाँ तथा संयुक्त पूँजी कंपनियाँ

पिछले अध्याय में हम व्यावसायिक संगठनों के विभिन्न प्रकारों के रूप में एकल स्वामित्व तथा साझेदारी के बारे में पढ़ चुके हैं। परंतु कुछ ऐसे संगठन भी व्यावसायिक क्रियाएँ करते हैं, जिनका मुख्य उद्देश्य केवल लाभ कमाना ही नहीं अपितु सेवाएँ उपलब्ध कराना है। यद्यपि बाजार में बने रहने के लिए थोड़ा बहुत लाभ कमाना आवश्यक है, परंतु उनका मुख्य उद्देश्य लाभ कमाना या व्यापार फैलाना नहीं होता। हम सबने टाटा स्टील, रिलांयस इण्डस्ट्रीज, कोल इंडिया, रिलांयस पावर, डी.एल.एफ, रैनबैक्सी इत्यादि के बारे में सुना है। परंतु कुछ प्रश्न हमारे मस्तिष्क में आते हैं कि उनके स्वामी कौन है? वे क्या करते हैं? कंपनी का आकार क्या है? इन कंपनियों में कितने वित्तीय लेनदेन होते हैं? आइए इनके बारे में और जानकारी लें।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- सहकारी समिति का अर्थ समझा सकेंगे;
- सहकारी समिति की विशेषताओं की व्याख्या कर सकेंगे;
- सहकारी समिति के विभिन्न प्रकारों की पहचान कर सकेंगे;
- सहकारी समिति के लाभों व हानियों की व्याख्या कर सकेंगे;
- संयुक्त पूँजी कंपनी को परिभाषित कर सकेंगे;
- संयुक्त पूँजी कंपनी की विशेषताएं बता सकेंगे;
- विभिन्न प्रकार की संयुक्त पूँजी कंपनियों की पहचान कर सकेंगे;
- संयुक्त पूँजी कंपनियों की सीमाएं और लाभों की व्याख्या कर सकेंगे;
- व्यावसायिक संगठन के रूप में संयुक्त पूँजी कंपनी की उपयुक्तता के विषय में सुझाव दे सकेंगे; और
- एक बहुराष्ट्रीय कंपनी का अर्थ समझा सकेंगे।

4.1 सहकारी समिति का अर्थ

औद्योगिक क्रांति के कारण आर्थिक तथा समाजिक असंतुलन के परिणाम स्वरूप भारत में सहकारी आंदोलन की शुरूआत हुई। पूँजीवादी देश जैसे संयुक्त राज्य अमेरिका तथा जापान

और समाजवादी देश दोनों प्रकार के देशों में सहकारी समितियों ने विशेष स्थान बनाया है। सहकारी शब्द लातिन शब्द Co-operari से निकला है। जिसमें 'Co' का अर्थ है 'के साथ' तथा 'operari' का अर्थ है 'कार्य करना'।

सहकारी शब्द का अर्थ है साथ मिलकर कार्य करना। इसका अर्थ हुआ कि ऐसे व्यक्ति जो समान आर्थिक उद्देश्य के लिए साथ मिलकर काम करना चाहते हैं वे समिति बना सकते हैं। इसे 'सहकारी समिति' कहते हैं। यह ऐसे व्यक्तियों की स्वयंसेवी संस्था है जो अपने आर्थिक हितों के लिए कार्य करते हैं। यह अपनी सहायता स्वयं और परस्पर सहायता के सिद्धांत पर कार्य करती है। सहकारी समिति में कोई भी सदस्य व्यक्तिगत लाभ के लिए कार्य नहीं करता है। इसके सभी सदस्य अपने-अपने संसाधनों को एकत्र कर उनका अधिकतम उपयोग कर कुछ लाभ प्राप्त करते हैं, जिसे वह आपस में बांट लेते हैं।

सहकारी समिति का एक दृश्य

सहकारी समिति, संगठन का एक प्रकार है जिसमें व्यक्ति अपनी इच्छा से, समानता के आधार पर अपने आर्थिक हितों के लिए मिलकर कार्य करते हैं।

उदाहरणार्थ, एक विशेष बस्ती के विद्यार्थी विभिन्न कक्षाओं की पुस्तकें उपलब्ध कराने हेतु एकत्र होकर एक सहकारी समिति बनाते हैं। अब वे प्रकाशकों से सीधे ही पुस्तकें क्रय करके विद्यार्थियों को सस्ते दामों पर बेचते हैं। क्योंकि वे सीधे प्रकाशकों से ही पुस्तकें क्रय करते हैं इसलिए मध्यस्थों के लाभ का उन्मूलन होता है। क्या आप सोचते हैं कि केवल एक उपभोक्ता द्वारा सीधे प्रकाशकों से पुस्तकें खरीदना संभव है। बिल्कुल नहीं, यह केवल आपसी सहयोग द्वारा ही संभव हो सकता है।

4.2 सहकारी समितियों की विशेषताएँ

सहकारी समिति एक विशेष प्रकार का व्यावसायिक संगठन है जो उन व्यावसायिक संगठनों से भिन्न है जिनका आप पूर्व में अध्ययन कर चुके हैं। आइए, इसकी विशेषतओं की वयाख्या करें :

i) **स्वैच्छिक संस्था :** एक सहकारी समिति व्यक्तियों की एक स्वैच्छिक संस्था है। एक व्यक्ति किसी भी समय सहकारी समिति का सदस्य बना सकता है, जब तक चाहे उसका सदस्य बना रह सकता है और जब चाहे सदस्यता छोड़ सकता है।

ii) **खुली सदस्यता :** सहकारी समिति की सदस्यता समान हितों वाले सभी व्यक्तियों के लिए खुली होती है। जाति, लिंग, वर्ण अथवा धर्म के आधार पर सदस्यता प्रतिबंधित नहीं होती, परन्तु किसी विशेष संगठन के कर्मचारियों की संख्या के आधार पर सीमित हो सकती है।

iii) **पृथक वैधानिक इकाई :** एक सहकारी उपक्रम को 'सहकारी समिति अधिनियम 1912' अथवा राज्य सरकार के संबंद्ध सहकारी समिति अधिनियम के अंतर्गत

पंजीकरण कराना अनिवार्य होता है। एक सहकारी समिति का अपने सदस्यों से पृथक वैधानिक अस्तित्व होता है।

iv) **वित्तीय स्रोत :** सहकारी समिति में पूंजी सभी सदस्यों द्वारा लगाई जाती है। इसके अलावा, पंजीकरण के बाद समिति ऋण ले सकती है। सरकार से अनुदान भी प्राप्त कर सकती है।

v) **सेवा उद्देश्य :** एक सहकारी समिति का प्राथमिक उद्देश्य अपने सदस्यों की सेवा करना है, यद्यपि यह अपने लिए उचित लाभ भी अर्जित करती है।

vi) **मताधिकार :** एक सदस्य को केवल एक मत देने का अधिकार होता है चाहे उसके पास कितने ही अंश हो।

4.3 सहकारी समितियों के प्रकार

सहकारी समितियों का वर्गीकरण उनके द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाओं की प्रकृति के आधार पर किया जा सकता है। सहकारी समितियों के मुख्य प्रकार निम्नलिखित हैं :

i) **उपभोक्ता सहकारी समितियाँ :** उपभोक्ताओं को यह उचित मूल्य पर उपभोक्ता वस्तुएं उपलब्ध करवाती हैं। ये समितियां आम उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा के लिए बनाई जाती हैं। ये सीधे उत्पादकों और निर्माताओं से माल खरीद कर वितरण श्रृंखला से मध्यस्थों का उन्मूलन कर देती है। इस प्रकार माल के वितरण की प्रक्रिया में मध्यस्थों का लाभ समाप्त हो जाता है और वस्तु कम मूल्य पर सदस्यों को मिल जाती हैं। कुछ सहकारी समितियों के उदाहरण हैं- केन्द्रीय भंडार, अपना बाजार, सुपर बाजार आदि।

ii) **उत्पादक सहकारी समितियाँ :** ये समितियां छोटे उत्पादकों को उत्पादन के लिए कच्चा माल, मशीन, औजार, उपकरण आदि की आपूर्ति करके उनके हितों की रक्षा के लिए बनाई जाती है। हरियाणा हैंडलूम, बायानिका, एपको (APPCO) आदि उत्पादक सहकारी समितियों के उदाहरण हैं।

iii) **सहकारी विपणन समितियाँ :** ये समितियां उन छोटे उत्पादकों और निर्माताओं द्वारा बनाई जाती हैं, जो अपने माल को स्वयं बेच नहीं सकते। समिति सभी सदस्यों से माल इकट्ठा करके उसे बाजार में बेचने का उत्तरदायित्व लेती है। अमूल दुग्ध पदार्थों का वितरण करने वाली गुजरात सहकारी दुग्ध वितरण संघ लिमिटेड ऐसी ही सहकारी विपणन समितियाँ है।

iv) **सहकारी विपणन समितियाँ :** इस प्रकार की समितियों का उद्देश्य सदस्यों को वित्तीय सहायता उपलब्ध कराना है। समिति सदस्यों से धन इकट्ठा करके जरूरत के समय उचित ब्याज दर पर ऋण उपलब्ध कराती है। ग्राम सेवा सहकारी समिति और शहरी सहकारी बैंक, सहकारी ऋण समिति के उदाहरण हैं।

v) **सहकारी सामूहिक आवास समितियाँ :** ये आवास समितियाँ अपने सदस्यों को आवासीय मकान उपलब्ध कराने हेतु बनाई जाती हैं। ये समितियाँ भूमि क्रय करके मकानों अथवा "लैटों का निर्माण कराती हैं तथा उनका आबंटन अपने सदस्यों को करती हैं।

पाठगत प्रश्न 4.1

निम्नलिखित कथनों में रिक्त स्थानों को उपयुक्त शब्दों से भरिए :

i. सहकारी समिति ऐसे व्यक्तियों का _____ संगठन होता है, जिसमें वे समान _____ उद्देश्यों हेतु कार्य करते हैं।

ii. सहकारी समिति का उद्देश्य अपने सदस्यों को _____ प्रदान करना है।

iii. एक सहकारी समिति का अपने सदस्यों से पृथक _____ होता है।

iv. सहकारी समिति स्वयं सहायता और _____ के सिद्धांत पर कार्य करती है।

v. उपभोक्ता सहकारी समितियां, वस्तुओं के वितरण की प्रक्रिया में _____ की भूमिका को समाप्त करने में सहायता करती है।

vi. अपना बाज़ार तथा केन्द्री भंडार _____ सहकारी समितियों के उदाहरण हैं।

4.4 सहकारी समिति के लाभ

व्यावसायिक संगठन के सहकारी स्वरूप के निम्नलिखित लाभ हैं :

i) **स्वैच्छिक संगठन :** यह एक स्वैच्छिक संगठन है जो पूँजीवादी तथा समाजवादी, दोनों प्रकार के आर्थिक तंत्रों में पाया जाता है।

ii) **लोकतांत्रिक नियंत्रण :** एक सहकारी समिति का नियंत्रण लोकतांत्रिक तरीके से होता है। इसका प्रबंधन लोकतांत्रिक होता है तथा 'एक व्यक्ति-एक मत' की संकल्पना पर आधारित होता है।

iii) **खुली सदस्यता :** समान हितों वाले व्यक्ति सहकारी समिति का गठन कर सकते हैं। कोई भी सक्षम व्यक्ति किसी भी समय सहकारी समिति का सदस्य बन सकता है और जब चाहे स्वेच्छा से समिति की सदस्यता को छोड़ भी सकता है।

iv) **मध्यस्थों के लाभ का उन्मूलन :** सहकारी समिति में सदस्य उपभोक्ता अपने माल की आपूर्ति पर स्वयं नियंत्रण रखते हैं, क्योंकि माल उनके द्वारा सीधे ही विभिन्न उत्पादकों से क्रय किया जाता है। इसलिए इन समितियों के व्यवसाय में मध्यस्थों को मिलने वाले लाभ का कोई स्थान नहीं रहता।

v) **सीमित देनदारी :** सहकारी समिति के सदस्यों की देनदारी केवल उनके द्वारा निवेशित पूंजी तक ही सीमित है। एकल स्वामित्व व साझेदारी के विपरीत सहकारी समितियों के सदस्यों की व्यक्तिगत सम्पत्ति पर व्यावसायिक देनदारियों के कारण कोई जोखिम नहीं होता।

vi) **स्थिर जीवन :** सहकारी समिति का कार्य काल दीर्घ अवधि तक स्थिर रहता है। किसी सदस्य की मृत्यु, दिवालियापन, पागलपन या सदस्यता से त्यागपत्र देने से समिति के अस्तित्व पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

4.5 सहकारी समिति की सीमाएँ

उपरोक्त लाभों के अतिरिक्त सहकारी समिति संगठन की कुछ सीमाएं भी है। आइए, इन सीमाओं के सम्बंध में जानें :

i) **अभिप्रेरण की कमी :** लाभ कमाने का उद्देश्य न होने के कारण सहकारी समिति के सदस्य पूर्ण उत्साह एवं समर्पणभाव से कार्य नहीं करते।

ii) **सीमित पूँजी :** साधारणतया सहकारी समितियों के सदस्य समाज के एक विशेष वर्ग के व्यक्ति ही होते हैं। इसलिए समिति द्वारा एकत्रित की गई पूंजी सीमित होती है।

iii) **प्रबंधन में समस्याएँ :** सहकारी समिति का प्रबंधन प्राय: विशेष कुशल नहीं होता क्योंकि सहकारी समिति अपने कर्मचारियों को कम पारिश्रमिक देती है।

iv) **प्रतिबद्धता का अभाव :** सहकारी समिति की सफलता उसके सदस्यों की निष्ठा पर निर्भर करती है जिसे न तो आश्वस्त किया जा सकता है और न ही बाध्य किया जा सकता है।

v) **सहयोग की कमी :** सहकारी समितियां परस्पर सहयोग की भावना से बनाई जाती हैं। लेकिन अधिकतर देखा जाता है कि व्यक्तिगत मतभेदों और अहंभाव के कारण सदस्यों के बीच लड़ाई-झगड़ा और तनाव बना रहता है। सदस्यों के स्वार्थपूर्ण रवैये के कारण कई बार समितियां बंद भी हो जाती हैं।

पाठगत प्रश्न 4.2

उल्लेख कीजिए कि सहकारी समिति के बारे में निम्न कथन सही है या गलत

i. कोई भी सक्षम व्यक्ति किसी भी समय समिति का सदस्य बन सकता है।

ii. सदस्यों की देनदारी सीमित होती है।

iii. सदस्यों से अलग वैधानिक अस्तित्व होने के कारण सहकारी समिति लम्बे समय तक कार्य कर सकती है।

iv. समिति का प्रबंध केवल एक व्यक्ति करता है।

v. सदस्यों द्वारा अधिक पूँजी का योगदान न कर पाने के कारण सहकारी समिति अच्छा काम नहीं कर पाती है।

vi. सहकारी समितियां लाभ कमाने के लिए नहीं, बल्कि सेवाएं प्रदान करने के लिए बनाई जाती है।

vii. व्यावसायिक प्रबंधक सहकारी समितियों में काम नहीं करना चाहते क्योंकि उन्हें पर्याप्त पारिश्रमिक नहीं मिलता।

viii. सहकारी समिति की सफलता उसके सदस्यों की निष्ठा पर निर्भर करती है जिसे न तो आश्वस्त किया जा सकता है और न ही बाध्य किया जा सकता है।

4.6 संयुक्त पूँजी कम्पनी का अर्थ

भारत में कंपनियाँ, भारतीय कंपनी अधिनियम 1956 द्वारा शासित होती हैं। अधिनियम के अनुसार एक कंपनी का अभिप्राय उस कंपनी से है जिसकी स्थापना तथा पंजीकरण इस अधिनियम के अंतर्गत हुआ हो।

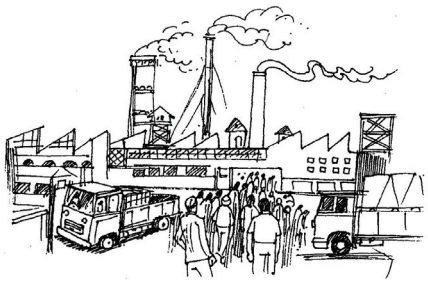

संयुक्त पूँजी कम्पनी का एक दृश्य

यह विधान द्वारा निर्मित ऐसा कृत्रिम व्यक्ति है जिसका स्वतंत्र वैधानिक अस्तित्व होता है, इसका शाश्वत जीवन तथा एक सार्वमुद्रा होती है।

एक कंपनी की पूँजी समान मूल्य वाले अंशों में विभाजित होती है। कंपनी के सदस्यों, जिनके पास एक या उससे अधिक अंश हों, कंपनी के अंशधारक कहलाते हैं।

4.7 संयुक्त पूँजी कंपनी की विशेषताएँ

i) **कृत्रिम वैधानिक व्यक्ति :** एक कंपनी, विधान द्वारा निर्मित एक कृत्रिम व्यक्ति है जो केवल विधि के चिंतन-अवलोकन से अस्तित्व में आता है। एक व्यक्ति, जिस प्रकार जन्म लेता है, बड़ा होता है, आपसी संबंध विकसित करता है और मृत्यु को प्राप्त होता है उसी प्रकार एक संयुक्त पूँजी कंपनी भी जन्म लेती है, बड़ी होती है, अपने आपसी संबंध विकसित करती है और अंततः मृत्यु को प्राप्त होती है। हालांकि इसे एक कृत्रिम व्यक्ति कहा जाता है, क्योंकि इसका जन्म, विकास और मृत्यु सब कुछ कानून द्वारा नियमित होता है।

ii) **स्वतंत्र वैधानिक इकाई :** कंपनी एक पृथक वैधानिक इकाई है जो अपने सदस्यों से भिन्न है। यह अपने नाम से संपत्ति रख सकती है, किसी से अनुबंध कर सकती है, यह दूसरों पर मुकदमा कर सकती है और दूसरे भी इस पर मुकदमा कर सकते हैं।

iii) **शाश्वत जीवन :** एक कंपनी का जीवन शाश्वत होता है तथा इसके जीवन पर इसके सदस्यों अथवा संचालकों की मृत्यु, पागलपन, दिवालियापन आदि का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

iv) **सीमित दायित्व :** एक सीमित कंपनी के सदस्यों का दायित्व उनके द्वारा लिए गए अंशों तक अथवा उनके द्वारा दी गई गारंटी तक सीमित होता है।

v) **सार्व मुद्रा :** एक कृत्रिम व्यक्ति होने के कारण कंपनी स्वयं हस्ताक्षर नहीं कर सकती इसलिए कंपनी की एक सार्व मुद्रा होती है।

vi) **अंशों की हस्तांतरणीयता :** एक सार्वजनिक सीमित कंपनी के अंश स्वतंत्रतापूर्वक हस्तांतरणीय होते हैं। स्कंध विनिमय के माध्यम से इन्हें खरीदा तथा बेचा जा सकता है।

vii) **स्वामित्व तथा प्रबंध का अलगाव :** एक सार्वजनिक कंपनी के सदस्यों की संख्या सामान्यतः काफी अधिक होती है, इसलिए वे सभी या उनमें से अधिकांश, कंपनी के दिन-प्रतिदिन के प्रबंधन में भाग नहीं ले सकते। कंपनी का प्रबंध संचालक मंडल द्वारा किया जाता है। जिसमें संचालकों को सदस्यों द्वारा चुना जाता है। अतः कंपनी का स्वामित्व उसके प्रबंध से अलग होता है।

पाठगत प्रश्न 4.3

निम्नलिखित कथनों में से कौन से कथन सत्य है तथा कौन से असत्य हैं :

i. एक संयुक्त पूँजी कंपनी स्थापित करने हेतु वैधानिक औपचारिकता की आवश्यकता है।

ii. एक सार्वजनिक सीमित कंपनी के अंश स्वतंत्रतापूर्वक हस्तांतरणीय होते हैं।

iii. संयुक्त पूँजी कंपनी के अंशधारकों का दायित्व असीमित होता है।
iv. एक संयुक्त पूँजी कंपनी अपने नाम पर संपत्ति नहीं रख सकती।

4.8 कंपनियों के प्रकार

स्वामित्व के आधार पर कंपनियाँ चार भिन्न प्रकार की होती हैं- निजी कंपनी, सार्वजनिक कंपनी, सरकारी कंपनी तथा बहुराष्ट्रीय कंपनी।

निजी कंपनी : कंपनी अधिनियम 1956 के अनुसार, निजी कंपनी का अभिप्राय ऐसी कंपनी से है जिसकी न्यूनतम प्रदत्त पूँजी एक लाख रूपये हो। इसकी विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :

(क) अपने सदस्यों के अंशों के हस्तांतरण के अधिकार को प्रतिबंधित करती है।
(ख) सदस्यों की अधिकतम संख्या पचास हो सकती है।
(ग) अपने अंशों अथवा ऋण-पत्रों में अभिदान हेतु जनता को आमंत्रित नहीं कर सकती।
(घ) अपने सदस्यों, संचालकों अथवा उनके संबंधियों के अतिरिक्त अन्य व्यक्तियों से जमा स्वीकार नहीं कर सकती तथा न ही ऐसा आमंत्रण दे सकती है।

सार्वजनिक कंपनी : कंपनी अधिनियम 1956 के अनुसार, सार्वजनिक कंपनी का अभिप्राय उस कंपनी से है जो निजी कंपनी नहीं है। इसकी विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :

(क) इसके अंशों का स्वतंत्रतापूर्वक हस्तांतरण किया जा सकता है।
(ख) इसकी न्यूनतम प्रदत्त पूँजी पाँच लाख रूपये होता है।
(ग) इसके सदस्यों का दायित्व सीमित होती है।
(घ) अंशधारकों की संख्या, निर्गमित अंशों की संख्या तक हो सकती है, परंतु सात से कम नहीं होनी चाहिए।

4.9 निजी सीमित तथा सार्वजनिक सीमित कंपनियों में अंतर

निजी सीमित	सार्वजनिक सीमित
क) न्यूनतम सदस्य : 2	क) न्यूनतम सदस्य : 7
ख) न्यूनतम प्रदत्त पूँजी : ₹ 1 लाख	ख) न्यूनतम प्रदत्त पूँजी : ₹ 5 लाख
ग) अधिकतम सदस्य : 50	ग) कोई अधिकतम सीमा नहीं।
घ) अपने अंशों अथवा ऋणपत्रों हेतु जनता को आमंत्रित नहीं कर सकती।	घ) अपने अंशों तथा ऋणपत्रों के विक्रय हेतु जनता को आमंत्रित करती है।
ङ) अंशों के हस्तांतरण को प्रतिबंधित करती है।	ङ) इसके अंश स्वतंत्रतापूर्वक हस्तांतरणीय है।
च) न्यूनतम दो संचालक अनिवार्य हैं।	च) न्यूनतम तीन संचालक अनिवार्य है।
छ) समामेलन का प्रमाण-पत्र प्राप्त होने के तुरंत बाद व्यवसाय प्रारंभ कर सकती हैं।	छ) व्यवसाय प्रारंभ करने का प्रमाण-पत्र मिलने के बाद ही व्यवसाय प्रारंभ कर सकती है।

ज) वैधानिक सभा बुलाने की आवश्यकता नहीं होती।	ज) वैधानिक सभा बुलाना तथा उसकी रिपोर्ट पंजीयक के कार्यालय में जमा करना अनिवार्य है।
झ) केवल दो सदस्यों की व्यक्तिगत उपस्थिति से गणपूर्ति हो जाती है।	झ) गणपूर्ति हेतु न्यूनतम पाँच सदस्यों की व्यक्तिगत उपस्थिति अनिवार्य है।

पाठगत प्रश्न 4.4

उचित शब्दों रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

i. निजी कंपनी में कम से कम _____ सदस्य अवश्य होने चाहिए।

ii. _____ कंपनी के अंशों का स्वतंत्रतापूर्वक हस्तांतरण संभव नहीं है।

iii. एच.एम.टी. लिमिटेड एक _____ कंपनी है।

iv. एक निजी कंपनी प्रारंभ करने हेतु न्यूनतम पूँजी की राशि _____ रूपये आवश्यक है।

4.10 संयुक्त पूँजी कंपनियों के लाभ

व्यावसायिक संगठनों के कंपनी स्वरूप को अन्य स्वरूपों की तुलना में कई लाभ प्राप्त होते हैं, उनमें से कुछ निम्नलिखित है :

i) **सीमित दायित्व :** एक कंपनी के अंशधारकों का दायित्व उनके द्वारा लिए गए अंशों के अंकित मूल्य तक सीमित होता है।

ii) **वृहद वित्तीय संसाधान :** स्वामित्व का कंपनी स्वरूप विशाल वित्तीय संसाधन जुटाने में सक्षम होता है। एक कंपनी की पूँजी, कम अंकित मूल्य वाले अंशों में विभाजित होती है जिससे कम आर्थिक संसाधनों वाले व्यक्ति भी कंपनी के अंश क्रय कर सकते हैं।

iii) **निरंतरता :** एक कंपनी का व्यावसायिक जीवन दीर्घकालीन होता है। एक निगमित संस्था के रूप में यह निरंतर चलती रहती है चाहे इसके सभी सदस्यों की मृत्यु हो जाए अथवा वे इसे छोड़ जाएँ।

iv) **अंशों की हस्तांतरणीयता :** एक सार्वजनिक सीमित कंपनी के सदस्य अपने अंशों का स्वतंत्रतापूर्वक, अन्य सदस्यों की सहमति के बिना, हस्तान्तरित कर सकते हैं।

v) **जोखिम का वितरण :** एक कंपनी में हानि का जोखिम बहुत सारे सदस्यों पर बिखरी हुई अवस्था में होती है।

vi) **सामाजिक लाभ :** कंपनी संगठन समाज की बचतों को संगठित करके उद्योग में निवेश करने में सहायता करता है।

4.11 संयुक्त पूँजी कंपनियों की सीमाएँ

i) **गठन की कठिनाई :** एक कंपनी का गठन बहुत मुश्किल तथा खर्चीला है। कई प्रपत्रों को तैयार करके पंजीयक के कार्यालय मं जमा कराना अनिवार्य होता है।

ii) **अत्यधिक सरकारी नियंत्रण :** एक कंपनी को अपने दिन-प्रतिदिन के प्रचालन में विस्तृत वैधानिक विनियमों को निभाना पड़ता हैं सामयिक रिपोर्ट, अंकेक्षण तथा लेखों का प्रकाशन अनिवार्य है।

iii) **अल्पजनाधिपत्य प्रबन्ध :** एक कंपनी के प्रबन्ध को लोकतांत्रिक माना जाता है परंतु व्यवहार में कंपनी का प्रबन्ध अल्पजनाधिपत्य होता है।

iv) **निर्णय में देरी :** प्रबंध के कई सारे स्तर निर्णयों को लेने में समस्याएँ उत्पन्न करते हैं। सभाएँ बुलाने आयोजित करने तथा प्रस्ताव पारित में बहुत समय व्यर्थ होता है।

v) **गोपनीयता का अभाव :** कंपनी अधिनियम 1956 के अनुसार एक कंपनी को अपने कार्यों में विभिन्न सूचनाएँ जनता को प्रस्तुत करनी होती है।

4.12 संयुक्त पूँजी कंपनी की उपयुक्तता

बड़े व्यवसायों के लिए संगठन का कंपनी स्वरूप उपयुक्त है। यह बड़े पैमाने पर प्रचालन हेतु बड़ी मात्रा में पूँजी संग्रहण को संभव बनाता है। मशीन निर्माण, सूचना प्रौद्योगिकी, लौह एवं इस्पात, अल्यूमीनियम, उर्वरक तथा औषधि उद्योग आदि संयुक्त पूँजी कंपनी के स्वरूप में संगठित किए जाते हैं।

4.13 सरकारी कंपनी

कंपनी अधिनियम 1956 के अनुसार एक कंपनी जिसकी प्रदत्त अंश पूँजी का न्यूनतम 51 प्रतिशत केन्द्र अथवा राज्य सरकार के पास हो, वह सरकारी कंपनी है। इसमें उसकी सहायक कंपनियाँ भी सम्मिलित हैं। सरकारी कंपनियों का अंकेक्षण भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक द्वारा किया जाता है तथा उसकी रिपोर्ट संसद में प्रस्तुत की जाती है।

एक सरकारी कंपनी

प्रमुख सरकारी कंपनियों के उदाहरण हैं- एच.एम.टी. लिमिटेड, कोल इंडिया लिमिटेड, स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड, एन.टी.पी.सी. लिमिटेड, महानगर टेलीफोन निगम लिमिटेड, ओ.एन.जी.सी. लिमिटेड आदि।

एक सरकारी कंपनी की विशेषताओं की सूची इस प्रकार है :

i. इसका स्वतंत्र वैधानिक अस्तित्व होता है।
ii. प्रदत्त अंश पूँजी का न्यूनतम 51 प्रतिशत सरकार के पास होता है।
iii. सभी अथवा अधिकांश संचालकों की नियुक्ति सरकार द्वारा की जाती है।
iv. इसके कर्मचारी लोक सेवक नहीं होते।

पाठगत प्रश्न 4.5

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

i. संयुक्त पूँजी कंपनी के सदस्यों के दायित्व उनके _____ तक सीमित होता है।

ii. व्यावसायिक संगठन के रूप में संयुक्त कंपनी का प्रबंधन _____ के हाथों में होता है।

iii. कंपनी के गठन की लागत बहुत _____ है।

iv. इंडियन ऑयल कार्पोरेशन लिमिटेड तथा ओ.एन.जी.सी. लिमिटेड _____ कंपनीयों के उदाहरण हैं।

v. एक कंपनी में हानि की जोखिम बहुत सारे _____ पर बिखरी हुई होती है।

4.14 बहुराष्ट्रीय कंपनियों का अर्थ

यह ऐसी कंपनी है जो अपना व्यवसाय अपने समामेलन वाले देश के साथ-साथ एक या अधिक अन्य देशों में भी चलाती है। इस तरह की कंपनियां वस्तुओं का उत्पादन अथवा सेवाओं की व्यवस्था एक अथवा अनेक देशों में करती हैं और उन्हें उन्हीं देशों अथवा अन्य देशों में बेचती हैं। आपने निश्चित रूप से कई बहुराष्ट्रीय कंपनियों के विषय में सुना होगा, जो कि भारत में व्यापार करती हैं जैसे फिलिप्स, एलजी, हुंडई, जनरल मोटर्स, कोका कोला, नेस्ले, सोनी, मैक डोनाल्ड्स, सिटी बैंक, पेप्सी फूड, कैडबरी आदि।

बहुराष्ट्रीय कंपनी

राष्ट्रीय सीमाओं के पार बड़े पैमाने पर उत्पादन तथा वितरण के कारण बहुराष्ट्रीय कंपनियों को अधिक कमाई होती है। जिससे इन्हें कई लाभ प्राप्त होते हैं।

4.15 बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लाभ

i) **विदेशी पूँजी का निवेश :** बहुराष्ट्रीय कंपनियों के सीधे पूँजी निवेश से अविकसित देशों को अपने आर्थिक विकास में सहायता मिलती है।

ii) **रोजगार के अवसर :** औद्यौगिक और व्यापारिक गतिविधियों के विस्तार से बहुराष्ट्रीय कंपनियां मेजबान देश में रोजगार के अवसर उपलबध कराती हैं और इससे उस देश के लोगों का जीवन स्तर बेहतर होता है।

iii) **उन्नत तकनीक का प्रयोग :** पर्याप्त साधनों की उपलब्धता के कारण बहुराष्ट्रीय कंपनियां बेहतर गुणवत्ता वाली वस्तुओं के उत्पादन के लिए विविध अनुसंधान तथा विकास कार्यक्रम चलाती है, जिससे उन्नत तकनीक के प्रयोग को बढ़ावा मिलता है। धीरे-धीरे दूसरे देश भी इस तकनीक का इस्तेमाल करने लगते हैं।

iv) **सहायक औद्योगिक इकाईयों में वृद्धि :** बहुराष्ट्रीय कंपनियां जिन देशों में अपना करोबार चलाती है वहां पर सहायक औद्योगिक इकाईयों, माल वितरकों तथा अन्य सेवाओं में वृद्धि होती है।

v) **निर्यात तथा विदेशी मुद्रा में वृद्धि :** बहुराष्ट्रीय कंपनियां कई बार मेजबान देश में उत्पादित वस्तुओं का निर्यात दूसरे देशों में भी करती हैं। इससे मेजबान देश के निर्यात को तो बढ़ावा मिलता ही है विदेशी मुद्रा भी प्राप्त होती है, जिससे देश की विदेशी मुद्रा में वृद्धि होती है।

vi) **स्वस्थ प्रतिस्पर्धा :** बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा अच्छी गुणवत्ता वाली वस्तुओं के उत्पादन से बाजार में बने रहने के लिए देशी उत्पादों को भी बाजार की मांग के अनुसार अपने उत्पादों की गुणवत्ता को सुधारना पड़ता है।

4.16 बहुराष्ट्रीय कंपनियों की सीमाएँ

उपरोक्त लाभों पर चर्चा से एक बात तो तय है कि ये बहुराष्ट्रीय कंपनियां जिस देश में स्थापित होती हैं उस देश को नि:संदेह लाभ पहुंचता है। लेकिन बहुराष्ट्रीय कंपनियों की कुछ सीमाएं हैं, जो निम्नलिखित हैं :

i) **मेजबान देशों को कम प्राथमिकता :** साधारणतया बहुराष्ट्रीय कंपनियां अधिक लाभ देने वाले उद्योगों में ही पूंजी निवेश करती हैं। वे मेजबान देश के पिछड़े क्षेत्रों में विकासशील उद्योगों को प्राथमिकता नहीं देती।

ii) **घरेलू उद्योगों पर प्रतिकूल प्रभाव :** बड़े पैमाने पर कारोबारिक गतिविधियों और अत्याधुनिक तकनीकी दक्षता के बल पर प्राय: बहुराष्ट्रीय कंपनियां घरेलू उद्योगों पर हावी हो जाती हैं और मेजबान देश में एक प्रकार से अपना एकाधिकार स्थापित कर लेती हैं। इसका परिणाम होता है कि घरेलू उद्योग बंद होने को मजबूर हो जाते हैं।

iii) **परंपराओं में परिवर्तन :** बहुराष्ट्रीय कंपनियां जो उपभोक्ता सामग्री बनाती हैं वे आमतौर पर मेज़बान देश के सांस्कृतिक मूल्यों को ध्यान में रखकर नहीं बनाती है। इससे मेज़बान देश के लोगों के खानपान तथा परंपरागत पहनावा संबंधी आदतों में परिवर्तन आने लगता है, जो कि वहां की सांस्कृतिक विरासत से अलग होता है।

पाठगत प्रश्न 4.6

I. नीचे बहुराष्ट्रीय कंपनियों के संबंध में कुछ कथन दिए गए हैं। उनमें से कौन से बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लाभ से संबंधित हैं?

i. बहुराष्ट्रीय कंपनियां विकासशील देशों के आर्थिक विकास को धीमा करती हैं।
ii. बहुराष्ट्रीय कंपनियां मेज़बान देशों को विदेशी मुद्रा कमाने में सहायता करती है।
iii. बहुराष्ट्रीय कंपनियों के कारण घरेलू उद्योग अपने उत्पादों की गुणवत्ता में सुधार लाते हैं।
iv. साधारणतया बहुराष्ट्रीय कंपनियां लाभ देने वाले उद्योगों में ही पूंजी निवेश करती है।
v. बहुराष्ट्रीय कंपनियां मेज़बान देश के बाजार पर कभी हावी नहीं होती।

II. बहुविकल्पीय प्रश्न

i. सहकारी समितियों में निम्न विशेषता नहीं होती :
(क) खुली सदस्यता (ख) पृथक वैधानिक अस्तित्व
(ग) लाभ के उद्देश्य (घ) मताधिकार

ii. निम्नलिखित में से कौन सा उपभोक्ता सहकारी समिति का उदाहरण नहीं है?

(क) अपना बाजार (ख) केन्द्रीय भंडार

(ग) सुपर बाजार (घ) नारायण आवासीय निर्माण कम्पनी

iii. एक सहकारी समिति के सदस्यों का दायित्व _____ होता है।

(क) सीमित (ख) असीमित

(ग) संयुक्त (घ) संयुक्त तथा पृथक

iv. एक सहकारी समिति की सफलता किस पर निर्भर करती है–

(क) इसके सदस्यों की निष्ठा (ख) केन्द्रीय सरकार

(ग) राज्य सरकार (घ) स्थानीय स्वयं सरकार

v. एक निजी सीमित कंपनी में पूँजी का योगदान किसके द्वारा किया जाता है?

(क) केन्द्रीय सरकार (ख) केवल जनता तथा सरकार

(ग) केवल इसके सदस्य (घ) केवल जनता को अंश निर्गमन द्वारा

आपने क्या सीखा

- सहकारी समिति ऐसे लोगों की स्वैच्छिक संस्था होती है जिनकी समान आवश्यकताएं होती हैं और वे समान आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए स्वैच्छिक रूप से मिल कर कार्य करते हैं। इसका उद्देश्य आपसी सहयोग से समाज के कमज़ोर वर्गों के हितों की रक्षा करना है।
- सहकारी समितियों की विशेषताएँ :
  i. स्वैच्छिक संस्था
  ii. खुली सदस्यता
  iii. पृथक वैधानिक इकाई
  iv. वित्त का स्रोत
  v. सेवा उद्देश्य
  vi. मताधिकार
- सहकारी समिति का गठन कम से कम दस सदस्यों के साथ सहकारी समिति अधिनियम 1912 के अंतर्गत किया जा सकता है। पंजीकरण के लिए सहकारी समितियों के पंजीयक के समक्ष समिति के उपनियम के साथ आवेदन पत्र प्रस्तुत करना होता है।
- **सहकारी समितियों के प्रकार :** उपभोक्ता सहकारी समितियाँ, उत्पादक सहकारी समितियाँ, विपणन सहकारी समितियाँ, मितव्ययता एवं ऋण समितियाँ, सहकारी सामूहिक आवासीय समितियाँ।
- **सहकारी समितियों के लाभ :** स्वैच्छिक संगठन, लोकतांत्रिक नियंत्रण, खुली सदस्यता, मध्यस्थों के लाभ का उन्मूलन, सीमित दायित्व, स्थाई जीवन।

- **सहकारी समितियों की सीमाएँ :** अभिप्रेरण का अभाव, सीमित पूँजी, नियंत्रण में कठिनाई, प्रतिबद्धता का अभाव, सहयोग का अभाव
- संयुक्त पूँजी कंपनी विधि द्वारा निर्मित एक ऐसा कृत्रिम व्यक्ति होता है, जिसका स्वतंत्र वैधानिक अस्तित्व होता है, जिसका शाश्वत जीवन होता है तथा जिसकी एक सार्वमुद्रा होती है। ऐसी कंपनियों का संचालन कंपनी अधिनियम 1956 के तहत किया जाता है।
- **संयुक्त पूँजी कंपनी की विशेषताएँ :** कृत्रिम कानूनी व्यक्ति, पृथक वैधानिक इकाई, शाश्वत जीवन, सदस्यों का सीमित दायित्व, सार्व मुद्रा, अंशों की हस्तांतरणीयता, स्वामित्व तथा प्रबंध का अलगाव।
- **कंपनियों के प्रकार :** निजी सीमित कंपनियाँ, सार्वजनिक सीमित कंपनियाँ, सरकारी कंपनियाँ, बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ।
- **संयुक्त पूँजी कंपनी के लाभ :** सीमित दायित्व, विशाल वित्तीय संसाधन, निरंतरता, अंशों की हस्तांतरणीयता, जोखिम का बिखराव, समाजिक लाभ।
- **संयुक्त पूँजी कंपनियों की सीमाएँ :** गठन की कठिनाई, अत्यधिक सरकारी नियंत्रण, अल्पजनाधिपत्य प्रबंध, निर्णय में देरी, गोपनीयता का अभाव।
- **सरकारी कंपनी :** जिस कंपनी के 51 प्रतिशत अथवा अधिक अंश केन्द्र अथवा राज्य सरकार के पास हों
- **बहुराष्ट्रीय कंपनी :** एक ऐसी कंपनी जिसका व्यवसाय अपने समामेलन के देश के अतिरिक्त एक अथवा अधिक अन्य देशों में भी चलता है।

पाठांत प्रश्न

1. सहकारी समिति का क्या अर्थ होता है?
2. उपभोक्ता सहकारी समिति की क्या गतिविधियां होती हैं?
3. उपभोक्ता सहकारी समिति और उत्पादक सहकारी समिति के दो-दो उदाहरण दीजिए।
4. मितव्ययिता एवं ऋण समिति का क्या अभिप्राय है?
5. सहकारी समिति के सदस्यों के बीच मतभेद होने तथा प्रेरणा के अभाव के क्या कारण हैं?
6. उत्पादक सहकारी समिति और विपणन सहकारी समिति में अंतर्भेद कीजिए।
7. संयुक्त पूँजी कंपनी से क्या तात्पर्य है?
8. संयुक्त पूँजी कंपनी के लाभ बताइए।
9. बहुराष्ट्रीय कंपनी का अर्थ बताइए।
10. संयुक्त पूँजी कंपनी के किन्हीं चार लक्षणों का वर्णन कीजिए।
11. निजी कंपनी की विशेषताएं क्या हैं? यह सार्वजनिक कंपनी से किस प्रकार भिन्न है?
12. निजी कंपनी तथा सार्वजनिक कंपनी में अंतर्भेद कीजिए।
13. संयुक्त पूँजी कंपनी के लाभों की गणना कीजिए।
14. संयुक्त पूँजी कंपनी की सीमाएं बताइए।

15. बहुराष्ट्रीय कंपनियों के पाँच उदाहरण दीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

4.1 (i) स्वैच्छिक, आर्थिक (ii) सेवाएँ (iii) वैधानिक अस्तित्व
(iv) आपसी सहायता (v) मध्यस्थों (vi) उपभोक्ता

4.2 (i) सही (ii) सही (iii) सही (iv) गलत
(v) सही (vi) सही (vii) सही (viii) सही

4.3 (i) सत्य (ii) सत्य (iii) असत्य (iv) असत्य

4.4 (i) दो (ii) निजी (iii) सार्वजनिक (iv) एक लाख

4.5 (i) अंशों के अंकित मूल्य (ii) संचालक मंडल (iii) अधिक
(iv) सरकारी (v) सदस्यों

4.6 **I.** (i) असत्य (ii) सत्य (iii) सत्य (iv) सत्य (v) असत्य

II. (i) ग (ii) घ (iii) क (iv) क (v) ग

आपके लिए क्रियाकलाप

- अपने स्थानीय क्षेत्र में कोई सहकारी समिति खोजिए तथा उसके बारे में निम्न सूचनाएँ प्राप्त करने का प्रयास कीजिए :
  क) समिति की क्रियाएँ
  ख) समिति के सदस्यों की संख्या
  ग) कोई समस्या जिसका सामना वह समिति कर रही हो
- कोई एक कंपनी खोजिए चाहे वह निजी, सार्वजनिक, सरकारी अथवा बहुराष्ट्रीय हो और उसके समामेलन तथा व्यवसाय प्रचालन के बारे में जानकारी एकत्र कीजिए।